



अँकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 23

सहयोग शुल्क : रु.1

नवम्बर : 2018

दिव्यांग सैतु

संपादक : - संतश्री अँरुषि प्रितेशभाई



दिव्यांगों को करूणा
की नहीं,
आत्मीयतापूर्ण
अपनत्व एवं सहयोग
की आवश्यकता :
- मोहन भागवत,
सरसंघसंचालक, RSS



दिव्यांगों को समाज
में हक व सम्मान
देना ही आम
नागरिकों का
कर्तव्य है
- नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री



उन लोगों से दूर रहें जो आपकी महत्वकांक्षाओं को
तुच्छ बनाने का प्रयास करते हैं। छोटे लोग हमेशा
ऐसा करते हैं, लेकिन महान लोग आपको इस बात
की अनुभूति करवाते हैं कि आप भी वास्तव में
महान बन सकते हैं
- संतश्री अँरुषि प्रितेशभाई





निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रू. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रू. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरूरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

यह प्रीमियम अंकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा



संपादकीय

दोस्तों,

दीपावली रोशनी का त्योहार है। दीयों की जगमगाहट के बीच हर कोई ईश्वर से सुख-समृद्धि की प्रार्थना करता है। पटाखों की आवाज़, मोम्बत्ती का प्रकाश, यह सब दीवाली की शान है। यह अंधकार पर प्रकाश की विजय है।

असतो मा सद्गमय ॥
तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
मृत्योर्मा मृतम् गमय ॥

धन, सुख-समृद्धि, विलासिता, रोशनी और सम्पन्नता की देवी लक्ष्मी, प्रभु विष्णु की अर्धांगिनी है। देवी लक्ष्मी अपने रूप, सौंदर्य और आकर्षण के लिए भी प्रख्यात हैं। महा लक्ष्मी अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करती, और उनकी मुरादे पूरी कर उन्हें धन और समृद्धि से भरपूर करती हैं। वेदों में लक्ष्मी को "लक्ष्यविधि लक्ष्मिहि" के नाम से संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ होता है, जो लक्ष्य प्राप्ति में मदद करें।

माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्या वासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। श्री राम के स्वागत में अयोध्या वासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं।

आपको नए वर्ष की शुभकामनाएं।

दिव्यांग सैतु

मासिक पत्रिका

नवम्बर : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 11

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री अंकार प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउन्डेशन

अंकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेंट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

मो. 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

079 26405200

MP: लाखों की नौकरी छोड़ इस दिव्यांग ने किया चुनाव लड़ने का फैसला...

गंची में दिव्यांग को देखा था भीख मांगते, कमजोरी को ताकत

सुनने और बोलने में अक्षम सुदीप शुक्ला ने इन्फोसिस की नौकरी छोड़कर 2018 का मध्य प्रदेश विधानसभा



चुनाव लड़ने का फैसला किया है। सुदीप शुक्ला मध्य प्रदेश के सतना से निर्दलीय उम्मीदवार होंगे। अलग-अलग जगहों पर लड़कियों के साथ गलत काम होता है। बलात्कार होता है, लेकिन कहीं पर भी सुनवाई नहीं होती। 70 सालों

से मैं देख रहा हूँ, नेता आ रहे हैं- जा रहे हैं। जब चुनाव होता है तब सभी हाथ जोड़ कर, पैर पकड़ कर वोट मांगते हैं। उसके बाद वो कुछ नहीं करते। इसलिए मैंने सोचा कि मैं नौकरी छोड़ देता हूँ और सच की लड़ाई लड़ूँ।

सुदीप, भारत की जानी-मानी टेक कंपनी इन्फोसिस में सॉफ्टवेयर इंजीनियर थे, जिनकी तनख्वाह करीब 1 लाख रुपये प्रति माह थी। समाज में बदलाव का जज्बा लिए उन्होंने चुनाव लड़ने का फैसला किया।

मैं आप लोगों की सहायता से लोगों तक अपनी बात पहुंचाऊंगा और सभी से जाकर मिलूंगा। मेरे साथ इंटरप्रेटर रहेंगे। मुझे भरोसा है कि मैं जीतूंगा, क्योंकि मैं सच की लड़ाई लड़ रहा हूँ।

अगर सुदीप जीतते हैं तो वो पहले दिव्यांग होंगे, जो मध्य प्रदेश से MLA बनेंगे।

प्रधानमंत्री के लिखे गीत पर दिव्यांग बच्चियों ने किया गरबा, भावविभोर हुए PM



नवरात्रों में गुजरात के लोगों में गरबा का चलन बहुत पुराना है। या यूँ कह लीजिए कि दशहरे व नवरात्रों में गरबा के बिना गुजरात की रातें अधूरी होती हैं। इस कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के योगदान का ताजा किस्सा इन दिनों तेजी से वायरल हो रहा है। प्रधानमंत्री ने गरबा के

लिए गुजराती भाषा में एक गीत लिखा था। इस गीत पर दिव्यांग बच्चियों ने परफॉर्मेंस दी है। इन बच्चियों का गरबा देख खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी भाव विभोर हो गए। यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो को रीट्वीट करते हुए पीएम मोदी ने बच्चियों की तारीफ की है। उन्होंने इसे रीट्वीट करते हुए लिखा कि यह मेरे दिल को छू गया। इन बच्चियों के परफॉर्मेंस ने गरबा को जीवंत कर दिया है। सभी को खुशहाल नवरात्रि की ढेर सारी शुभकामनाएं।

ये हैं जागरूक मतदाता...

दोनों हाथ और एक पैर नहीं, फिर भी हर चुनाव में केंद्र पर अकेले जाकर पैर से मतदान करते हैं शिक्षक वर्मा

शहर के नई सड़क स्थित एक सरकारी माध्यमिक स्कूल में बच्चों को शिक्षा की सीख देने वाले दिव्यांग शिक्षक सिद्धनाथ वर्मा की एक बेहतर सरकार/ जन प्रतिनिधि चुनने की जिद के सामने उनकी शारीरिक अक्षमता से लेकर तमाम चुनौतियां पिछले 32 सालों से मात खा रही हैं। बचपन से ही इनके दोनों हाथ व एक पैर पूरी तरह विकसित नहीं होने के बाद भी यह हर चुनाव में मतदान करने जाते हैं। घर से अकेले ही तीन पहिया साइकिल अर्द्ध विकसित हाथों से चलाकर मतदान केंद्र पहुंचते हैं। एकमात्र सही अपने दाएं पैर के दम पर चलकर केंद्र में जाकर वोट भी पैर के अंगूठे से ही डालते हैं। सबको प्रेरणा देते हैं हमें मताधिकार का उपयोग जरूर करना चाहिए। वोट डालने का उनका यह सिलसिला आज 54 बरस के होने पर भी नहीं टूटा। आगामी 28 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में भी वे पूरे उत्साह से वोट डालेंगे। लोगों को जागरूक करने के लिए इन दिनों स्वप्रेरणा से भी फुर्सत के समय में घर पर मतदाता जागरूकता से जुड़े स्लोगन लिख रहे हैं।

पहली बार अविकसित हाथों में पकड़कर मतपत्र डाला था- शिक्षक वर्मा के अनुसार 22 वर्ष की उम्र में पंचायत चुनाव में सबसे पहले वोटिंग की थी। पैर के सहारे स्याही लगाने के बाद अपने अविकसित हाथों में ही मतपत्र पकड़कर पेटी में डाला। जब इवीएम के सहारे वोट पैर के अंगूठे से बटन दबाकर डालना शुरू किया। आइकॉन बना तो खुद को खड़ा करके डेमो दूंगा- 28 नवंबर को विधानसभा चुनाव होना है। आइकॉन के लिए नामांकित



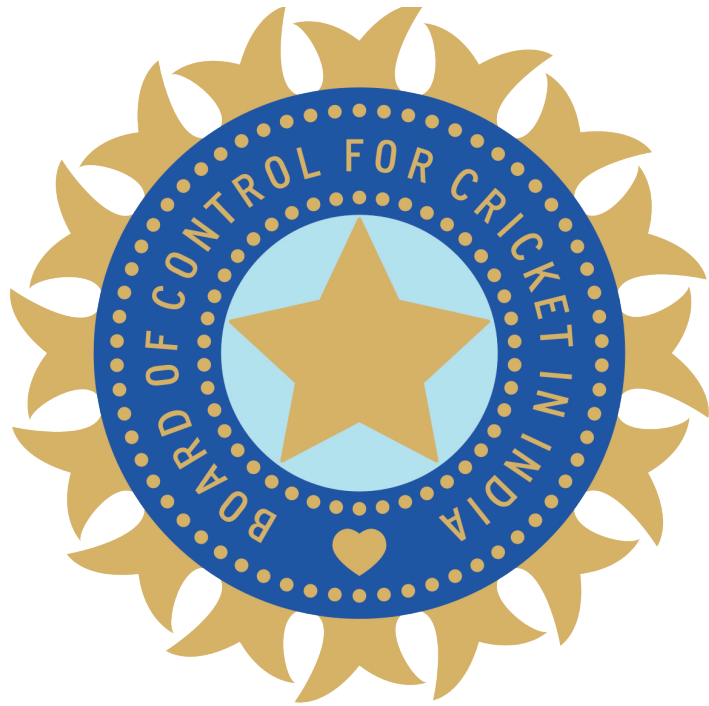
जिला निर्वाचन कार्यालय ने हाल ही में उनका नाम दिव्यांग आइकॉन वोटर बनाने में नामांकित कर निर्वाचन आयोग को भेजा है। स्वीप के जिला नोडल अधिकारी राजेंद्र शिप्रे व जिला निर्वाचन कार्यालय के पर्यवेक्षक दिनेश शर्मा ने बताया जिले में 4 हजार से ज्यादा दिव्यांग वोटर्स हैं। दिव्यांग शिक्षक वर्मा आइकॉन के रूप में चयनित होते हैं तो निश्चित तौर पर उनका सहयोग उनके जैसे मतदाताओं को निर्भीक, निष्पक्ष मतदान करने के लिए जागरूक करने में कारगर बनेगा। ज्ञात रहे, दिव्यांग वर्मा को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 2007 में तो निःशक्तों के कल्याण के लिए उत्कृष्ट काम करने पर 1998 में राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिल चुका है।

होने पर दिव्यांग शिक्षक वर्मा बोले हम जैसे लोग कई बार शारीरिक क्षमता के कारण ही वोट डालने नहीं जाते। यदि मुझे आइकॉन के रूप में मतदाताओं को जागरूक करने का मौका मिला तो मैं उनके सामने खड़ा होकर खुद का डेमो दूंगा। मतदाता जागरूकता के स्लोगन तैयार करते सिद्धनाथ वर्मा।

भारतीय टीम में खेलेंगे टोंक के दो दिव्यांग खिलाड़ी

ये केचियां हमें उड़ने से खाक रोकेंगी, कि हम परों से नहीं हौसलों से उड़ते हैं... कुछ इसी प्रकार का हौसला टोंक के दो...

हादसा भी नहीं तोड़ पाया हौसला



ये केचियां हमें उड़ने से खाक रोकेंगी, कि हम परों से नहीं हौसलों से उड़ते हैं...कुछ इसी प्रकार का हौसला टोंक के दो दिव्यांगों ने भी दिखाया है। उनका चयन भारतीय टीम में शामिल किए जाने के लिए आयोजित प्रशिक्षण शिविर के लिए हुआ है। भारत में अगले वर्ष होने वाले दिव्यांग क्रिकेट वर्ल्ड कप में टोंक के दो दिव्यांग खिलाड़ी भी नजर आ सकेंगे। इनका वर्ल्ड कप की टीम के लिए आयोजित प्रशिक्षण शिविर के लिए चयन हुआ है। जो हैदराबाद में 23 से 28 अक्टूबर को आयोजित होगा। इस प्रशिक्षण शिविर में अच्छा प्रदर्शन करने वाले को वर्ल्ड कप

खेलने का मौका मिल सकेगा। टोंक के महावीर शर्मा एवं रोहन रघुवंशी पिछले वर्षों से काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। यहीं कारण है कि उनका प्रशिक्षण के लिए चयन हुआ है तथा इंडियन क्रिकेट टीम दिव्यांग के लिए उनका चयन हो सकेगा। जहां इस खबर से दोनों ही खिलाड़ियों के परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। बीडीसीए के पदाधिकारी रवि बंजारा ने बताया कि महावीर शर्मा एवं रोहन रघुवंशी भारतीय टीम में चयन के लिए आयोजित प्रशिक्षण शिविर भाग लेंगे। महावीर शर्मा ने बताया कि बोर्ड ऑफ डिसएबल एसोसिएशन का ब्रांड एंबेसडर मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर को बनाया जाएगा।

हादसा भी नहीं तोड़ पाया हौसला

रोहन रघुवंशी के पिता प्रेम रघुवंशी ने बताया कि रोहन जब आठ वर्ष का था तब उसका पैर जीप के पहिए के नीचे आ गया था। उसके बाद 19 वर्ष में दोबारा हाइवे पर दुर्घटना की चपेट में आ गया था।

टीम इंडिया में चयन की पूरी उम्मीद

इस साल अप्रैल में आयोजित हुई राष्ट्रीय स्तरीय दिव्यांग क्रिकेट प्रतियोगिता में महावीर शर्मा ने बिहार टीम का नेतृत्व किया। ऑल राउंडर शर्मा ने केरला में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में सबसे अच्छा प्रदर्शन किया। अच्छे प्रदर्शन को देखते हुए महावीर शर्मा एवं रोहन रघुवंशी को इंडिया टीम में चयन होने की पूरी उम्मीद है।

दिव्यांग विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं पर लगेगा 'खास' ठप्पा...

मुंबई विश्वविद्यालय ने दिव्यांग विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं को आसानी से पहचानने को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय ने सभी परीक्षा केंद्रों को निर्देश दिया है कि वे शीत सत्र की परीक्षा से दिव्यांग विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं पर 'दिव्यांग' (पीडब्ल्यूडी) का ठप्पा लगाएं, जिससे ऑनलाइन मूल्यांकन के समय इनकी पहचान की जा सके और दिव्यांगों को मिलने वाली सहूलियत मिल सके।

विश्वविद्यालय के मुताबिक, पिछले वर्ष से ऑनलाइन मूल्यांकन शुरू होने के बाद दिव्यांगों की उत्तर पुस्तिकाओं को पहचानने में दिक्कत हो रही थी। इससे दिव्यांगों को अंकों में मिलने वाली सहूलियत में अड़चन आ रही थी। यह अड़चन शीत सत्र यानी अक्टूबर से दिसंबर में होने वाली परीक्षाओं का मूल्यांकन करते समय न आए, इसलिए यह निर्णय लिया गया है। यह ठप्पा मूल और पूरक उत्तर पुस्तिकाओं के पृष्ठ 3, 10 और 15 पर दाहिनी तरफ लगाया जाएगा। परीक्षा के समय कोई व्यवधान नहीं आए, इसलिए सभी कॉलेजों को परीक्षा से पहले रबर की मुहर बनवाने का निर्देश दिया गया है।



दिव्यांगों को मिलता है समय

उच्च शिक्षा विभाग के निर्देश पर दिव्यांग विद्यार्थियों को उत्तर लिखने के लिए एक घंटे पर 20 मिनट अतिरिक्त समय मिलता है। साथ ही, उन्हें 5 प्रतिशत अंक की सहूलियत और उत्तर लिखने के लिए एक सहायक भी मिलता है। विद्यार्थियों को परीक्षा हॉल में जाने में कोई परेशानी नहीं हो, इसलिए उनके लिए ग्राउंड फ्लोर पर ही परीक्षा की व्यवस्था की जाती है।

दिव्यांग बच्चों की मैराथन को हरी झंडी दिखाएंगे ग्रेट खली

आशा किरण दिव्यांग शिक्षा संस्थान कोठी घुमारवीं के सौजन्य से करवाई जा रही है प्रथम 3 दिवसीय राज्य स्तरीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता के अंतिम दिन मिनी मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मिनी मैराथन दौड़ को विश्व प्रसिद्ध ग्रेट खली ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह मिनी मैराथन दौड़ आई.पी.एच. चौक से लेकर कोठी तक गई है, जिसमें लगभग 150 प्रतिभागी दिव्यांग बच्चों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में पूरे प्रदेश की विभिन्न संस्थाओं के दिव्यांग बच्चों



ने भाग लिया। प्रतियोगिता में जो बच्चे पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे, उन्हें सम्मानित किया गया।

इस प्रथम राज्य स्तरीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता में विभिन्न संस्थाओं के संस्थापक, बच्चों व उनके अभिभावकों ने भाग लिया तथा विशेष रूप से ऊना सदर के विधायक सतपाल रायजादा भी मौजूद रहे। इस अवसर पर खली ने कहा कि इस तरह के आयोजन दूसरी संस्थाओं को भी करवाने चाहिए जो समाज की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती हैं। इससे हर प्रतिभागी का मनोबल बढ़ेगा तथा ऐसी प्रतियोगिता होने से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।

फतेहाबाद [राजेश भादू]। तरूण ढिल्लो ने जकार्ता में आयोजित पैरा एशियाड गेम की बैडमिंटन स्पर्धा में भाग लेते हुए एक स्वर्ण व एक कांस्य जीता। मूलरूप से गांव नहला के रहने वाले 70 फीसद दिव्यांग तरूण ढिल्लो की जिंदगी में कई कठिनाई आई। हालांकि परिवार की मदद से वे अब बैडमिंटन के स्टार खिलाड़ी बन गए हैं।

उन्होंने 2014 में दक्षिण कोरिया में आयोजित पैरा एशियाड में रजत पदक जीता था। उस प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में उन्हें इंडोनेशिया के खिलाड़ी फ्रेडी सेतियावान से हार का सामना करना पड़ा। इस बार आयोजित पैरा एशियाड में उन्होंने दस अक्टूबर को सेतियावान को उसके देश में ही हराते हुए स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया।

तरूण ढिल्लो का परिवार चार दशक पहले भूना के निकटवर्ती गांव नहला से दिल्ली में अपने व्यवसाय के लिए चला गया था। वहां जाकर उन्होंने डेयरी फार्मिंग व खेती की। डेयरी फार्मिंग में उनके ताऊ रणवीर ढिल्लो व पिता सतीश ढिल्लो ने नाम कमाया। हालांकि तरूण ढिल्लो ने हिसार में गांव सातरोड पर अपने ननिहाल में ही पढ़ाई की।

2002 में साइकिल से गिरने पर लगी थी घुटने पर चोट

तरूण के एयर इंडिया में कार्यरत चचेरे भाई तेजेंद्र ने बताया कि 2002 में तरूण उनके पास दिल्ली गया हुआ था। उस दौरान तरूण साइकिल पर जन्माष्टमी पर लगा मेला देखने जा रहा था तो रास्ते में गिरने के कारण घुटने में चोट लग गई। शुरूआत में उस चोट को गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन बाद में उसका घाव पड़ गया। जिसका लंबा इलाज चला। पहले ऑपरेशन से घुटना ठीक नहीं हुआ तो दिल्ली एम्स से दूसरी बार ऑपरेशन करवाया। दूसरा ऑपरेशन तो ठीक हो गया, लेकिन लगातार पैर की मूवमेंट न होने के चलते पैर जाम हो गया। जो अब भी नहीं मुड़ता।

2014 में पदक जीतने के कुछ दिन पहले हो गया था पिता का देहांत

एक पैर से नाप रहा उपलब्धियों की दुनिया, पैरा एशियाड में जीते दो पदक



दिव्यांग तरूण ढिल्लो ने जकार्ता में आयोजित पैरा एशियाड गेम की बैडमिंटन स्पर्धा में भाग लेते हुए एक स्वर्ण व एक कांस्य जीता।

तरूण ने बताया कि वह 2014 पैरा एशियाड की तैयारी में लगा हुआ था। प्रतियोगिता सितंबर में होनी थी। करीब तीन महीने पहले उसके पिता सतीश का देहांत हो गया। इसके चलते वह मानसिक परेशान रहने लगा। हालांकि उसके ताऊ रणवीर ने उसकी मदद करते हुए हौसला बढ़ाया जिसके बदौलत उसने उस प्रतियोगिता में रजत पदक जीता।

व्यक्तिगत स्पर्धा में जीता स्वर्ण और टीम इवेंट में पाया कांस्य

तरूण ढिल्लो ने 6 से 13 अक्टूबर को जकार्ता में आयोजित

पैरा एशियाड में दो पदक जीते। पहला स्वर्ण पदक बैडमिंटन की व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग लेते हुए जीता। वहीं दूसरा पदक कांस्य पदक के रूप में जीता। यह पदक उन्हें बैडमिंटन की टीम इवेंट में मिला। पैरा एशियाड में पदक जीतने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टीम के सभी खिलाड़ियों को अपने आवास पर बुलाकर मुलाकात की। मेरे ताऊ व चचेरा भाई तेजेंद्र ने हमारी बहुत मदद की। ननिहाल से भी पूरा सहयोग मिला। हरियाणा सरकार की खेल नीति भी इस पदक में जीतने में काफी सहायक है।

रांची के मुकेश कंचन को 'दिव्यांग रत्न 2018' सम्मान

झारखंड में रहने वाले भारतीय दिव्यांगजन क्रिकेट टीम के कप्तान मुकेश कंचन को राजस्थान में 'दिव्यांग रत्न 2018' से सम्मानित किया जायेगा। 30 सितंबर को जयपुर में आयोजित एक विशेष समारोह में उन्हें सम्मानित किया जायेगा।

'उम्मीद हेल्पलाइन फाउंडेशन' समारोह का आयोजन कर रहा है। चित्तौड़गढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद सीपी जोशी समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार में राज्यमंत्री धनाराम पुरोहित होंगे।



महज एक साल की उम्र में एक दुर्घटना में दिव्यांग हुए मुकेश कंचन बचपन से ही क्रिकेट के शौकीन थे। उन्होंने वर्ष 2002 में

राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट मैच में भाग लेना शुरू किया।

वर्ष 2014 में वह भारतीय दिव्यांगजन क्रिकेट टीम में शामिल हुए। वर्ष 2015 में पहली बार भारतीय दिव्यांगजन टीम के कप्तान बने। दुनिया के कई देशों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके मुकेश 17 अंतरराष्ट्रीय शृंखला खेल चुके हैं। वह झारखंड की राजधानी रांची के कोकर में रहते हैं। बचपन में एक पैर खराब होने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री लेने के बाद उन्होंने बीएड की भी डिग्री हासिल की।

दिव्यांग जनों के बीच खेलकूद को बढ़ावा देने के लिए मुकेश ने डिजेबल स्पोर्ट्स एवं जन उत्थान समिति का गठन किया। राज्य के 300 दिव्यांगजनों को इस संस्था से जोड़ा।

इस महिला को सलाम, दोनों पैर गंवाने के बाद भी न मानी हार

पढ़ने की ललक थी तो मुश्किल समय में भी हार नहीं मानी। 2014 में अंकिता ने एमकॉम किया और 2015 में एमफिला अब दयालबाग शिक्षण संस्थान से पीएचडी कर रही हैं।



जिजीविषा यानी जीने की चाह। मुश्किल से मुश्किल हालात में भी जो हौसले से सफलता की नई इबारत लिखे। हौसले की कलम से संघर्ष की किताब पर अंकिता ने ऐसी ही इबारत लिखी है। बीमारी ने शरीर तोड़ा, दो पैर चले गए, लेकिन जिजीविषा से न केवल खुद को संभाला बल्कि दूसरों की जिंदगी में भी उजियारा कर रही हैं।

दयालबाग स्थित मेहरबाग की अंकिता श्रीवास्तव अगस्त 2012 में डेंगू की चपेट में आ गई थीं। मल्टी ऑर्गेन्स फेल होने लगे तो दिल्ली में भर्ती कराया गया। गैंगरिन से इंफेक्शन बढ़ा। एम्स में 20 सितंबर को दायां पैर घुटने से नीचे काट दिया गया। 54 दिन कोमा में रहीं। एम्स में इलाज के कारण डेढ़ साल तक सूरज नहीं देखा। मार्च 2014 में अस्पताल से घर आईं। मार्च 2016 में दयालबाग शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'अवेयरनेस प्रोग्राम ऑफ स्टूडेंट्स विद फिजिकली चैलेंज्ड' शीर्षक पर वर्कशॉप कर दिव्यांगों को जागरूक करना शुरू किया। अंकिता 'द चैलेंजिंग वन्स' वाट्सएप ग्रुप से जुड़कर दिव्यांगों को इलाज के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं। उनके लिए मुश्किल दौर

एक बार फिर आया। एड़ी गलने से जुलाई 2017 में बायां पैर भी काटना पड़ा। इसी वर्ष दोनों कृत्रिम पैर लगे। फिर भी उन्होंने खुशियां बांटने की ठान ली। अंकिता दयालबाग में लग रहे चिकित्सा शिविरों में चार से साल से बराबर अपना समय देती हैं। यही नहीं हर रविवार को सिकंदरपुर में गरीब बच्चों के लिए पाठशाला भी खुद सजाती हैं।

वे कहती हैं कि किसी दिव्यांग लड़की को बेबसी का सामना न करना पड़े। इसलिए वह दिव्यांग आश्रम खोलना चाहती हैं। जिसमें लड़कियां रहें और पढ़ें। कहती हैं, प्रोफेसर एलएन कोहली की मदद से वह दिव्यांगों के लिए जागरूकता कार्यक्रम शुरू करने जा रही हैं।

मुश्किल समय में भी पढ़ाई जारी

पढ़ने की ललक थी तो मुश्किल समय में भी हार नहीं मानी। 2014 में अंकिता ने एमकॉम किया और 2015 में एमफिला। अब दयालबाग शिक्षण संस्थान से पीएचडी कर रही हैं।

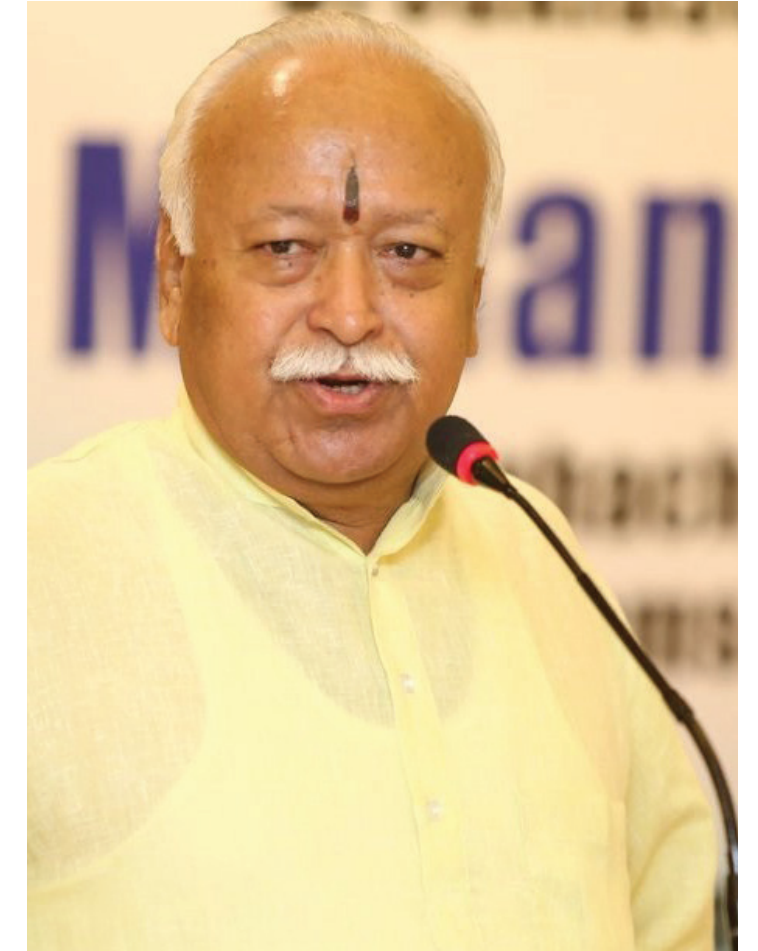
दिव्यांगों को करुणा की नहीं, आत्मीयतापूर्ण अपनत्व एवं सहयोग की आवश्यकता : भागवत

जयपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा है कि दिव्यांगों को करुणा की नहीं बल्कि आत्मीयतापूर्ण अपनत्व एवं सहयोग की आवश्यकता है तथा हम अपनत्व की संवेदना से अपने सेवाकार्य को सर्वव्यापी करें, यही सच्ची सेवा है।

उन्होंने कहा कि दिव्यांगों की सेवा का कार्य बहुत कठिन है और वे हमारे मध्य आज से नहीं हैं, वे सदैव से समाज में रहे हैं। बस संवेदनहीनता के कारण इस क्षेत्र में सेवा कार्य के लिये प्रयास कम हो गए थे। भागवत जयपुर के जामडोली में दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

भागवत ने कहा कि समाज में पुनरूत्थान का दौर चल रहा है। दिव्यांगता के सभी क्षेत्रों में अखिल भारतीय स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता थी। सक्षम ने मात्र 10 वर्षों के प्रयासों से सम्पूर्ण भारत में यह व्यवस्था खड़ी कर ली, इसके लिए सभी कार्यकर्ता साधुवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में सेवा दे रहे कार्यकर्ताओं को कर्मशील और चिंतनशील रहकर सहयोग करते हुए दिव्यांगों को समाज के सामान्य वर्ग के बराबर लाना होगा।

इस अवसर पर केन्द्रीय सामाजिक अधिकारिता मंत्री थावर चंद गहलोत ने केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगता के क्षेत्र में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में देश के 42 प्रांतों के लगभग 1500 सक्षम कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इनमें करीब 600 दिव्यांगजन थे। इस अवसर पर राजस्थान के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता



मंत्री डॉ. अरूण चतुर्वेदी ने दिव्यांगता के क्षेत्र में प्रदेश सरकार के कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि दिव्यांगों का यूनिक आईडी बनाने में राजस्थान देशभर में प्रथम है। इस मौके पर सक्षम के राष्ट्रीय अध्यक्ष दयाल सिंह पंवार सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

‘स्मित चाइल्ड एज्युकेशन एन्ड डेवलपमेंट’ द्वारा आयोजित ‘दिव्यांग खेलैया महोत्सव’ में दीप प्रागट्य करते हुए ‘दिव्यांग सेतु’ के सह संपादक श्री मिहिरभाई शाह



हौसला: नहीं हैं दोनों हाथ फिर भी दौड़ाते हैं स्कूटी-मुंह से दबाते हैं हॉर्न, क्लच और ब्रेक



बिना हाथ के चलाते हैं स्कूटी और पैर से लगाते हैं ब्रेक, ऑफिस जाने के लिए किसी से नहीं लेते लिफ्ट

बालोद (छत्तीसगढ़)। ये हैं दिव्यांग बसंत हिरवानी जिनके दोनों हाथ नहीं हैं फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। 1983 से तहसील कार्यालय में सहायक ग्रेड 2 के पद पर पदस्थ हैं। वे पैरों से लिखते हैं। ऑफिस आने के लिए रोज उन्हें किसी का सहारा लेना पड़ता था। राहगीरों या जान-पहचान से रोज लिफ्ट लेकर वे बालोद आना-जाना करते थे। लेकिन अब ऑफिस आने के लिए भी खुद की व्यवस्था बना ली है। हाथ नहीं होने के बाद भी वे अब खुद दूसरों की तरह स्कूटी दौड़ा रहे हैं। दुर्ग में तीन मैकेनिक ने मिलकर इनके लिए स्कूटी तैयार की। जिसे वे बिना हाथ के ही चला रहे हैं।

स्टेयरिंग में हॉर्न

बसंत का कहना है कि स्टेयरिंग लगे होने से इसे चलाने का मजा ही कुछ है। उन्होंने स्टेयरिंग में ही उन्होंने हार्न फीट करवाया है। पैर की मदद से ही वे इंडिकेटर लाइट, सेल्फ स्टार्ट का भी बटन दबा लेते हैं। ब्रेक और क्लच भी पैरों से ही चलाते हैं। जब रास्तों से गुजरते हैं तो लोग ये

सोच कर हैरान हो जाते हैं कि आखिर बिना हाथ के बसंत गाड़ी कैसे चला रहा है। अब तक बसंत इतने सालों से लोगों से लिफ्ट मांग कर ही दफ्तर जा रहे थे।

जिसे देख कर हर कोई कहता है क्या आदमी है

जिले में किसी शासकीय विभाग में बसंत एक ऐसा पहला कर्मचारी है। जिसे हर कोई देखकर कहता है वाह क्या आदमी है। पैरों से वह सरपट लिखता है। दफ्तर में भी पैरों के जरिए ही वह कई काम कर लेता है। सील लगाना, साइन करना और विभिन्न फाइलों को मॉटेन करना बसंत के लिए आसान सा है। बसंत उन लोगों के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं जो खुद को दिव्यांग समझते हैं और अपनी कमजोरी में ही जीते रहते हैं। कभी आगे बढ़ने की सोचते नहीं। लेकिन बसंत ने अपनी दिव्यांगता को कभी कमजोरी नहीं मानी।

५१ फीट की क्रच को गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकोर्ड में स्थान मिला

३ दिसंबर विश्व दिव्यांग दिन के रूप में मनाया जाता है। उसके अंतर्गत नवजीवन ट्रस्ट संचालित डॉ. एच डी स्वामी स्कूल फॉर मेन्टली चैलेंज द्वारा स्कूल केम्पस में ५१ फीट की क्रच का अनावरण हुआ था। इस क्रच के अनावरण का आयोजन स्कूल केम्पस द्वारा किया गया था।

स्कूल के प्रिंसिपल निलेश पंचाल के मुताबिक इसके पहले २०१५ में दिल्ली में एक फर्मास्यूटिकल कंपनी द्वारा एशियाई फेस्ट में ४५ फीट की क्रच बनाई गई थी। जो गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकोर्ड भी बना था। वो क्रच फेस्ट के अंतर्गत तीन दिन के लिए रखा गया था। वह रिकोर्ड अब टूटा है।

अनावरण के समय ही रिकोर्ड के बदले में गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकोर्ड द्वारा एक प्रशस्तिपत्र दिया गया था। इस रिकोर्ड को लिम्का बुक और गोल्डन बुक को भी दिखाया जाएगा।



वॉइस टू
दिव्यांग



अंकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

